युवा उद्यमियों ने मेहनत से बनाई नई पहचान

दुर्विजय सिंह •

- नौकरी छोड़ गीडा में स्थापित की फैक्ट्री, अब दे रहे रोजगार
- साड़ी, कीचन स्टैंड, तो कहीं बनाई जा रही अगरबत्ती

कौशल निगम

कमलेश सिंह

सुमित चंद

अमृता राय

पिपरौली : पहले पूर्वांचल में रोजगार की कमी का सबसे बड़ा कारण यही था कि आसपास कोई बड़ा औद्योगिक क्षेत्र नहीं था। ऐसे में जिन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिली, वे यहां से रोजगार की तलाश में दिल्ली-मुंबई से लेकर विदेश तक की खाक छानते थे। अब इस स्थिति में बदलाव आने लगा है। गीडा में उद्योगों की स्थापना ने खुद को साबित करने का प्रयास करने वाले युवाओं को एक मौका दिया।

गीडा के विभिन्न सेक्टरों में युवा उद्यमियों ने अपनी मेहनत से नई पहचान बनाई है। कोई अगरबत्ती और धूपबत्ती बना रहा है तो कोई स्टील के किचन स्टैंड। इंटरलाकिंग ब्रिक्स से लेकर साड़ी बनाने की फैक्ट्री तक में युवा उद्यमी हाथ आजमा रहे हैं। पुरुषों के अलावा महिला उद्यमियों ने भी अपनी फैक्ट्री लगाई और उसे सफलतापूर्वक चला भी रही हैं। यहां तैयार माल को पड़ोसी प्रांत बिहार व पश्चिम बंगाल के अलावा नेपाल के मैदानी इलाकों तक भेजना आसान है, इसलिए उत्पादों को अच्छा व सस्ता बाजार भी मिल रहा है।

युवा उद्यमी कमलेश सिंह ने कहा कि गोरखपुर का रहने वाला हूं तो यहां गीडा में हो रहे बदलाव से वाकिफ था। फैक्ट्री खोलने के लिए गीडा कार्यालय से संपर्क किया। भूमि मिली तो यहां इंटरलाकिंग ब्रिक्स बनाने की फैक्ट्री लगाई। उत्पाद को बाजार तक पहुंचाने में कोई दिक्कत नहीं आई। आज फैक्ट्री व मार्केटिंग टीम मिलाकर करीब 60 लोगों को रोजगार मिला है। स्थानीय निवासी युवा उद्यमी कौशल निगम ने सेक्टर 15 में स्टेनलेस स्टील के किचन स्टैंड और फ्रूट टोकरी की फैक्ट्री लगाई है। आसपास के बाजार में बहुत अच्छा रिस्पांस मिला।

कौशल ने बताया कि उन्होंने अपनी फैक्ट्री में एक दर्जन कारीगरों के अलावा छह युवाओं को मार्केटिंग के लिए रखा है।

सेक्टर 27 में महिला उद्यमी अमृता राय की फैक्ट्री में अगरबत्ती और धूपबत्ती बनती हैं, जो मार्केट में हाथों-हाथ बिक जाती हैं। यहां दो दर्जन महिलाओं को रोजगार मिला है। वहीं, सुमित चंद ने साड़ी बनाने का काम शुरू किया। इनका माल भी आसपास के बाजार के अलावा बिहार में खप जाता है। सुमित ने बताया कि उनकी साड़ी फैक्ट्री में दो दर्जन महिलाओं को रोजगार मिला है।